हिन्दुस्तान 21-07-2014

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में वार्ता के लिए आए ईरानी दल ने किया निरीक्षण।

एनएसआई और ईरानी दल के बीच वार्ता में इंस्टीट्यूट खुलवाने पर बनी सहमति।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और ईरानी प्रतिनिधि मण्डल के साथ वार्ता में निकला हल

ईरान में खुलवाएंगे इंस्टीट्यूट

एनएसआई

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

ईरान के पास उच्च क्षमता वाली चीनी मिलें हैं लेकिन राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) सरीखा संस्थान नहीं। इसका अहसास ईरान को तब हुआ जब मध्य एशियाई देशों के हालात बिगड़े। भारतीय मूल के लोगों ने भी हालात के मद्देनजर वहां जाना बन्द कर दिया। एनएसआई आए ईरान के प्रतिनिधि मण्डल ने बुधवार को लंबी चर्चा के बाद ईरान में चीनी संस्थान की स्थापना के लिए सहयोग मांगा। एनएसआई वैज्ञानिकों को ईरान आने की दावत भी दी।

ईरानी प्रतिनिधि मण्डल ने संस्थान परिसर में 48 घंटे गुजारे। गन्ना उत्पादन वाले खेत देखे। चीनी मिल देखी जहां छात्रों को प्रैक्टिकल कराया जाता है। क्लास रूम में पढ़ाई का माहौल और स्तर देखा। संस्थान के इतिहास से जुड़ी तमाम जानकारियां लीं। लंबा समय लाइब्रेरी में बिताया और सबकुछ जानने के बाद अपनी जुबान खोली। अपनी परेशानियां और मजबूरियां गिनाईं और एनएसआई से साफ लफ्जों में सहयोग के लिए कहा। इस वार्ता के बाद दोनों देशों के प्रतिनिधियों के बीच वार्ता होगी।

ईरान की अपनी दिक्कतें

एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन, ईरान से आए वलीउल्लाह तग्गीपुर, कौरोश ताहिर खानी, मदही मजोची और ग्लोबल केन शुगर सर्विसेज नई दिल्ली के एसपी त्रिपाठी के साथ घंटों वार्ता की। निदेशक ने बताया कि ईरान के पास 10 हजार टन क्षमता वाली चीनी मिलें हैं। सामान्य तौर पर इतनी अधिक क्षमता वाली चीनी मिलें कम होती हैं। इन्हें चलाने के लिए विशेषज्ञ चाहिए। उनकी दिक्कत यह है मध्य एशियाई देशों के जो हालात रहे उसके चलते उनके पास अब एक्सपर्ट और तकनीकी विशेषज्ञ नहीं रह गए हैं। बाहरी देशों विशेष रूप से भारत से जाने वाले तकनीशियनों आदि की कमी हो गई। एक समय तक वहां भी पेट्रोल के कारण ऊर्जा को लेकर कोई सवाल नहीं उठता था लेकिन अब ऊर्जा बचत वह भी करना चाहते हैं। चीनी के सह उत्पाद के रूप में मिलने वाली बिजली आदि का उपयोग करना चाहते हैं।

ईरान जाएगा एनएसआई का डेलीगेशन

निदेशक नरेन्द्र मोहन ने बताया कि राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) से एक प्रतिनिधि मण्डल भविष्य में ईरान जा सकता है। एक्सपर्ट राय के लिए वह ईरान में सभी चीनी मिलों को देखकर उन्हें सलाह देगा कि किस तरह इसको अपग्रेड किया जाए। दोनों देशों के बीच वार्ता सफल रही है।

संस्थान से मांगी मदद

ईरानी प्रतिनिधि मण्डल का कहना था कि वह अपने यहां तकनीकी विशेषज्ञ तैयार करना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने पहला सुझाव दिया कि वे ईरान में एनएसआई सरीखा तकनीकी संस्थान खोलने में उनकी मदद करे। यह हेल्प सिलेबस से लेकर हर स्तर पर होनी चाहिए। निदेशक ने कहा कि मंत्रालय के माध्यम से दोनों देश इस पर वार्ता कर सकते हैं। संस्थान ईरान की भरपूर मदद करने को तैयार है। निदेशक ने बताया कि यह भी प्रस्ताव था कि वह अपनी सभी चीनी मिलों से एक-एक सदस्य को एनएसआई प्रशिक्षण के लिए भेज दें। इनकी विशेष ट्रेनिंग कराई जा सकती है। एनएसआई उन्हें मैनपावर उपलब्ध करा दे।